शोध मंथन Vol. XII No.III July-Sep. 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

कुशीनगर जनपद (उ० प्र०) की व्यावसायिक संरचनाः एक भौगोलिक विश्लेषण

मनोज कुमार चौहान
शोधार्थी, भूगोल विभाग
मदन मोहन मालवीय पी० जी० कॉलेज
भाटपार रानी देवरिया (उ० प्र०)
सम्बद्ध दीनदयाल उपाध्याय, गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर
ईमेलः *manojddu1993@gmail.com*

प्राप्तिः 28.08.2021
स्वीकृतः 15.09.2021

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रपत्र का उद्देश्य एक पिछड़े हुए अर्थतंत्र में जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना का विश्लेषण करना है, जिससे उसके भू–वैन्यासिक संगठन में वांछित परिवर्तन किया जा सके एवं निवासियों के जीवन स्तर में गुणात्मक परिवर्तन हो सके। इसके लिए शोधार्थी द्वारा प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों का संकलन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

कुशीनगर जनपद मध्य गंगा मैदान के उत्तरांचल में स्थित है। इसका विस्तार 26025′ उत्तरी अक्षांश एवं 83035′ पूर्वी देशान्तर से 84017′ पूर्वी देशान्तर तक है। यह उत्तर से दक्षिण लगीाग 95 किमी0 लम्बा एवं पूरब से पश्चिम 90 किमी0 चौड़ाई में 2903.1 वर्ग किमी0 क्षेत्र पर विस्तृत है। इस जनपद के उत्तरी–पूर्वी भाग को बड़ी गण्डक (नारायणी नदी) बिहार राज्य से पश्चिमोत्तर भाग में तथा पश्चिम दक्षिण भाग में मझना नाला गोरखपुर जनपद से तथा दक्षिण की ओर जनपद देवरिया एवं बिहार राज्य अलग करता है। प्रशासनिक दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र 6 तहसीलों 14 विकासखण्डों, 141 न्याय पंचायतों एवं 1049 ग्राम सभाओं में विभक्त है।

जनसंख्या की व्यावसायिक संरचना से तात्पर्य सम्पूर्ण कार्यरत जनसंख्या का विभिन्न कार्य वर्गों के अन्तर्गत लगे लोगों से है। इसमें किसी क्षेत्र की सम्पूर्ण जनसंख्या में कार्यरत जनशक्ति एवं पराक्षितों का अनुपात ज्ञात होता है। साथ ही कार्य विशेष में संलग्न जनसंख्या की सापेक्षिक स्थिति भी स्पष्ट हो जाती है। इसका विश्लेषण यौन अनुपात एवं आयु वर्ग के साथ करने से क्षेत्र विशेष के आर्थिक विकास की संभावित दशा का भी आकलन किया जा सकता है। रिचार्ड (1978) के अनुसार ''किसी भी क्षेत्र की कार्यात्मक संरचना क्षेत्र विशेष की संरचनात्मक संगठन को प्रभावित करती है।''

''कार्यरत जनसंख्या से तात्पर्य ऐसे लोगों से है, जो शारीरिक या मानसिक रूप से किसी न किसी आर्थिक कार्य में संलग्न है जिससे उनके आश्रितों का भरण–पोषण होता है।'' इस कथन की पुष्टि जे0वी0 गार्नियर (1966) ने भी किया है। वास्तव में किसी भी भौगोलिक क्षेत्र में साक्षरता, जनसंख्या स्थानान्तरण, नगरीकरण एवं सामाजिक विकास आदि सभी तत्व आर्थिक परिस्थितियों से प्रभावित होते हैं। चाँदना एवं सिद्धू के अनुसार ''जनसंख्या एक उत्पादक तत्व है और इसकी उत्पादकता इसकी कार्यक्षमता पर ही निर्भर करती है। किसी भी समाज के व्यावसायिक संरचना पर अनेक तत्वों का प्रभाव पड़ता है, जिसमें प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता का प्रभाव सर्वाधिक होता है।''

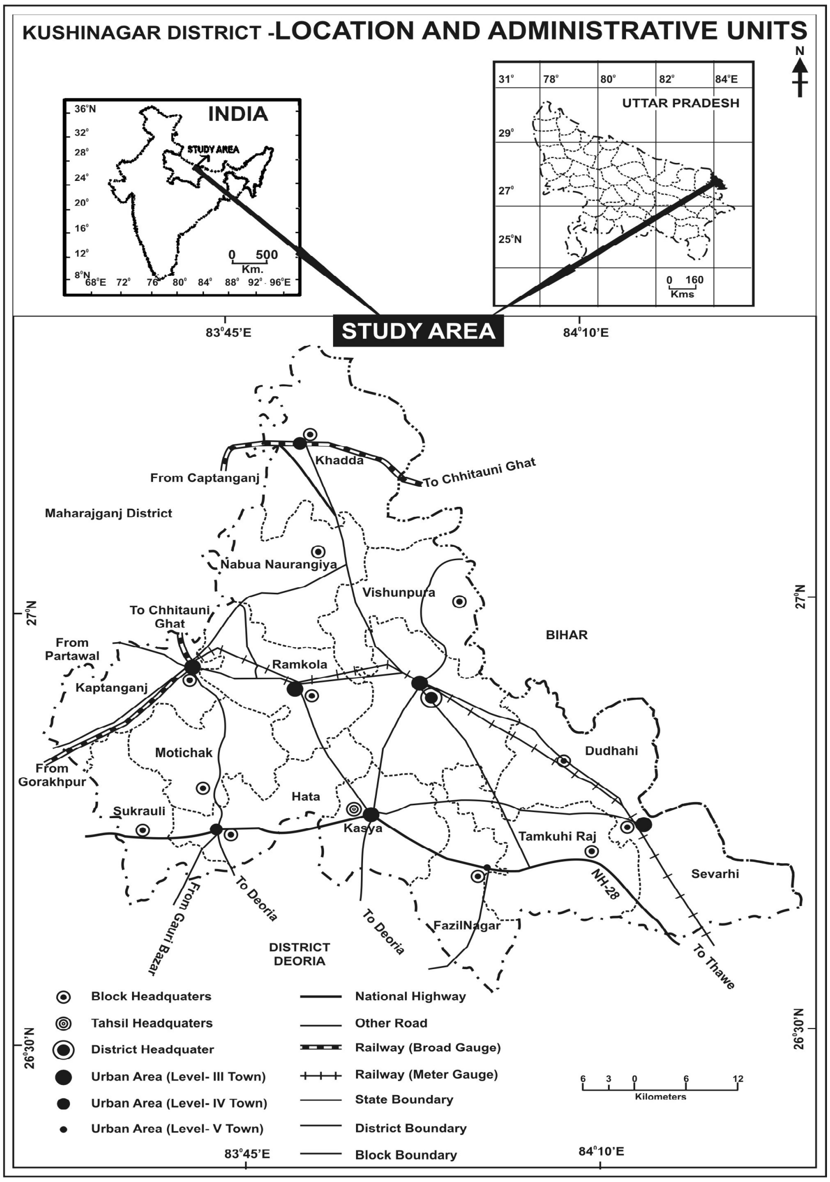

अग्रवाल (1971) के अनुसार ''व्यावसायिक संरचना के अध्ययन से क्षेत्र विशेष के निवासियों के रहन–सहन एवं जीवन–यापन के स्तर को सटीक अनुमान लगाया जा सकता है।'' त्रियाक (1976) के अनुसार ''धनात्मक सीमान्त उत्पादकता वाली जनसंख्या को काम करने वाले की श्रेणी में रखा जाता है, जिसका अधिकतम अंश मजदूरों का होता है।''

विश्लेषण

अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या का अधिकांश भाग कृषि कार्य में संलग्न है। वर्ष 2019 की जनगणना के अनुसार अध्ययन क्षेत्र की कुल जनसंख्या का 14.67 कार्यरत एवं 85.33 भाग अकार्यशील जनसंख्या का है। कार्यशील जनसंख्या का लगभग 70.26 प्रतिशत प्राथमिक उत्पादनों में, जिनमें कृषक 35.21 प्रतिशत एवं कृषि श्रमिक 35.05 प्रतिशत सम्मिलित है। मात्र 4.62 प्रतिशत कार्यरत जनसंख्या द्वितीय एवं 25.11 प्रतिशत तृतीय कार्यों में संलग्न है (तालिका संख्या–1)

तालिका संख्या–1

जनपद कुशीनगर : व्यावसायिक संरचना (कार्यरत जनसंख्या का प्रतिशत)

क्र. सं.	विकासखण्ड	कृशक	कृषि श्रमिक	परिवारिक उद्योग	अन्य कार्य
1	कप्तानगंज	47.01	28.31	4.02	20.63
2	रामकोला	37.97	33.79	4.78	23.44
3	मोतीचक	45.56	24.50	3.62	26.30
4	सुकरौली	44.22	28.92	4.88	21.97
5	हाटा	39.85	27.58	4.55	27.99
6	खड्डा	29.80	47.15	3.13	19.91
7	नेबुआ नौरंगिया	36.52	44.08	3.42	15.97
8	विशुनपुरा	30.82	42.57	3.89	22.70
9	पडरौना	31.47	33.70	4.90	29.91
10	कसया	32.16	28.80	5.60	33.41
11	दुदही	29.64	41.62	6.32	22.40
12	फाजिलनगर	33.98	26.96	5.73	33.31
13	तमकुही	27.83	30.02	6.20	35.93
14	सेवरही	31.04	43.17	4.01	21.76
	योग जनपद	**35.21**	**35.05**	**4.62**	**25.11**

स्रोत : जिला सांख्यिकीय पत्रिका, 2019

शोध मंथन Vol. XII No.III July-Sep. 2021 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.354 (SJIF)

अध्ययन क्षेत्र में कृषि कार्य में संलग्न जनसंख्या में होते एवं भूमिहीन कृषक मजदूरों की संख्या बहुत अधिक है, साथ ही कषशि कार्य कुछ महिनों तक सीमित होता है। शेष कृषि श्रमिक बेकार रहते हैं, क्षेत्र की आर्थिक विपन्नता का यह एक प्रमुख कारण है क्षेत्र की व्यावसायिक संरचना, तालिका संख्या–1 में उल्लेखित है।

कार्य
63
44
30
97
99
91
97
70
91
41
40
31
93
76
11

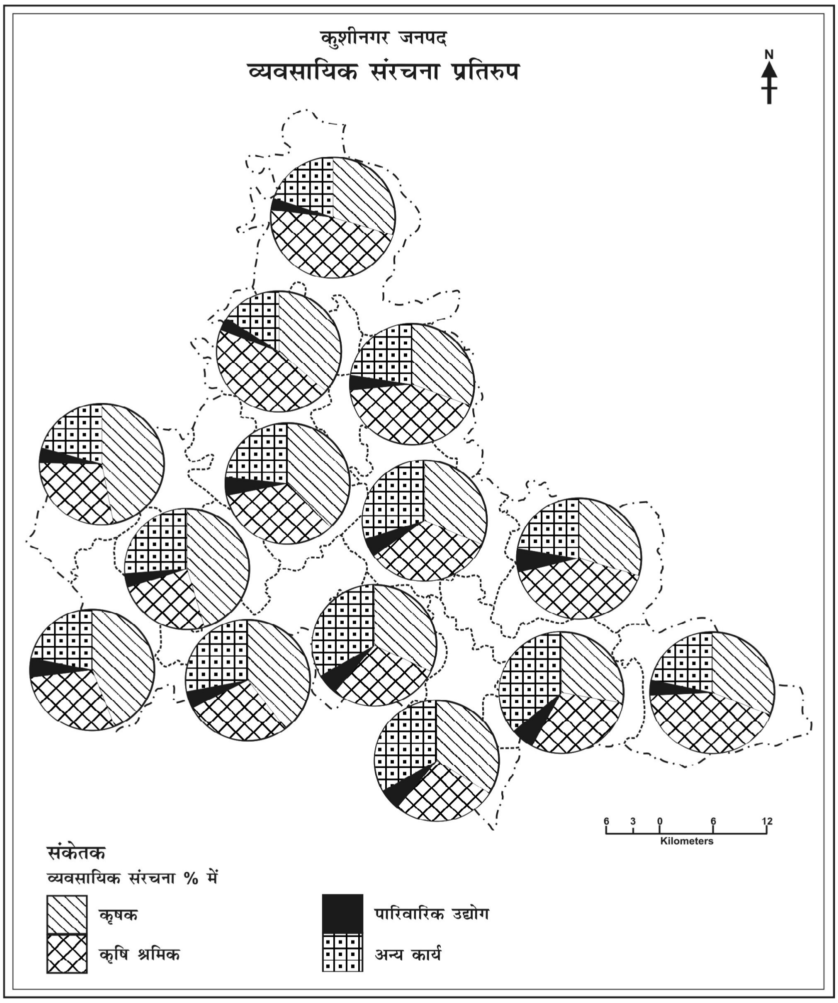

कुशीनगर की जनसंख्या का मात्र 33.17 प्रतिशत जनसंख्या ही कार्यरत है। जिसका अधिकांश भाग कृषि कार्यों में संलग्न है। तालिका संख्या–2 से स्पष्ट है कि 2001 में अध्ययन क्षेत्र की कृषि कार्यों में संलग्न जनसंख्या का प्रतिशत 85.94 है जो 2011 में घटकर 77.14 प्रतिशत हो गया है, इन वर्षों में ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत जनसंख्या क्रमशः 33.51 प्रतिशत एवं 34.65 प्रतिशत है –

तालिका संख्या–2

जनपद कुशीनगर : व्यावसायिक संरचना प्रतिरूप 2001–2019 ग्रामीण एवं नगरीय

(प्रतिशत में)

जनसंख्या वर्ग	जनपद			ग्रामीण			नगरीय		
	2001	2011	2019	2001	2011	2019	2001	2011	2019
कुल कार्यरत जनसंख्या	33.17	34.21	31.33	33.51	34.65	33.42	26.91	24.93	12.67
कृषि कार्य में संलग्न	85.94	77.14	67.50	88.57	80.21	70.26	31.84	16.17	24.78
पारिवारिक उद्योग	3.43	3.94	4.82	3.82	3.75	4.62	15.98	7.65	8.01
अन्य व्यवसाय	10.61	18.90	27.67	8.59	16.02	25.11	52.17	76.17	67.20

स्रोत : जिला सांख्यिकीय पत्रिका, 2001, 2011, 2019

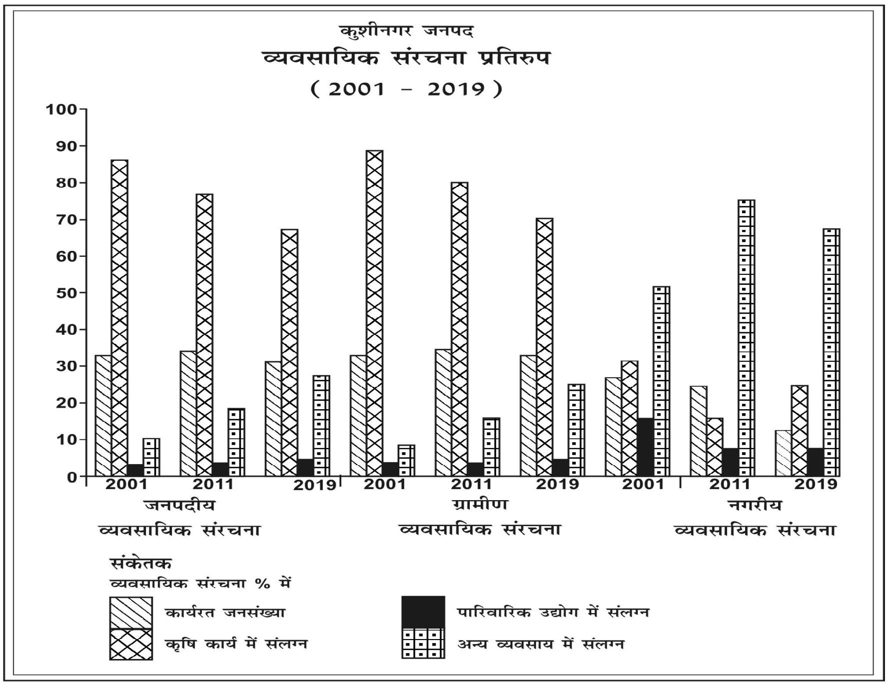

2019
12.67
24.78
8.01
67.20

2001, 2011 एवं 2019 के दशक में नगरीय जनसंख्या में यह प्रतिशत क्रमशः 26.91, 24. 93 एवं 12.67 प्राप्त है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि कार्य में यह प्रतिशत बढ़कर 70.26 प्रतिशत हो गया जबकि इन्हीं वर्षों में नगरीय जनसंख्या की कृषि कार्य में संलग्नता का प्रतिशत 31.84, 16.17 एवं 24. 78 प्रतिशत है।

पारिवारिक उद्योग में अध्ययन क्षेत्र की 2001, 2011 एवं 2019 के दशक में 3.43, 3.34 व 4.82 प्रतिशत जनसंख्या संलग्न है।

2001 में ग्रामीण जनसंख्या में पारिवारिक उद्योग के अन्तर्गत 2.82 प्रतिशत जनसंख्या संलग्न थी, जो 2011 में बढ़कर 3.75 प्रतिशत एवं वर्ष 2019 में बढ़कर 4.62 प्रतिशत हो गई। इसी प्रकार नगरीय क्षेत्र में इस वर्ष के अन्तर्गत क्रमशः 15.98 तथा 2011 में बढ़कर 7.65 प्रतिशत एवं वर्ष 2019 में 8.01 प्रतिशत दर्ज की गई। जबकि इन्हीं वर्षों में ग्रामीण जनसंख्या का अन्य व्यवसायों में संलग्नता का प्रतिशत क्रमशः 8.59 व 16.02 एवं 25.11 एवं नगरीय जनसंख्या का क्रमशः 52.17, 76. 17 व 67.20 प्रतिशत सम्मिलित है।

सम्पूर्ण कार्यरत जनसंख्या का मुख्य व्यवसायों में संलग्नता 2001, 2011 व 2019 में अधिक स्पष्ट करने हेतु सम्पूर्ण कार्यरत जनसंख्या को तीन वर्गों में विभक्त किया गया है। जिसमें इसका तुलनात्मक पक्ष स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आया है, इसके लिए कृषि पर आधारित जनसंख्या को कृषिगत जनसंख्या के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है तथा उद्योग जो गांवों में सम्पादित होते हैं, उनको घरेलू उद्योग के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया तथा वाणिज्य, व्यापार तथा संचार अन्य सेवाओं को अन्य व्यवसाय के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है।

कृषिगत जनसंख्या

कृषिगत जनसंख्या से तात्पर्य कृषक एवं कृषि मजदूरों की सम्मिलित संस्था से है जिनका मुख्य व्यवसाय कृषि है और इसी से इनकी आजीविका भी चलती है। यद्यपि कृषिगत जनसंख्या किसी भी क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण कारक के रूप में कार्य करती है, फिर भी कृषि आधारित जनसंख्या के प्रतिशत में कमी क्षेत्र के विकास एवं उच्च जीवन स्तर का द्योतक है। विकासखण्ड स्तर पर 2011 से 2019 के मध्य कृषिगत जनसंख्या में भिन्नता मिलती है वर्ष 2011 की अपेक्षा 2019 में कृषिगत जनसंख्या में कमी दृष्टिगोचर होती है।

पारिवारिक उद्योग

पारिवारिक उद्योग की स्पष्ट परिभाशा सर्वप्रथम 1977 की औद्योगिक नीति में दी गई थी। जिसमें इसके अन्तर्गत छोटे स्तर के उद्योगों को मान्यता प्रदान की गई है। नगरीय क्षेत्रों में यह अपने निवास अथवा किराये की मकान में भी चलाया जा सकता है। ''इण्डियन फैक्ट्री एक्ट'' के अन्तर्गत इस प्रकार के उद्योगों का रजिस्ट्रेशन नहीं होता है। ये मुख्यतः स्थानीय पूँजी और संसाधनों द्वारा संचालित होते है।

जनपद में 2011 की जनगणना के अनुसार 3.75 प्रतिशत जनसंख्या प्राथमिक उद्योग में संलग्न है जो अविकसित मानव संसाधन एवं अविकसित अर्थ व्यवस्था का द्योतक है। 2011 की अपेक्षा 2019 में इस प्रतिशत में वृद्धि हुई जो विकास का सूचक है, वर्ष 2011 में प्राथमिक उद्योग का सर्वाधिक विकास (4.84 प्रतिशत) फाजिलनगर विकासखण्ड में, जबकि न्यूनतम प्रतिशत (2.99)

सेवरही विकासखण्ड का है। वर्ष 2019 में प्राथमिक उद्योग में संलग्न जनसंख्या का सर्वाधिक प्रतिशत (6.32) दुदही विकासखण्ड का है, जबकि न्यूनतम प्रतिशत (3.13) खड्डा विकासखण्ड में है।

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में पारिवारिक विकास की वृद्धि दर न्यूनतम है। यह जनपद कृषि प्रधान क्षेत्र होने के कारण यहाँ भारी उद्योगों का अभाव पाया जाता है इसके साथ ही साथ खनिज एवं ऊर्जा संसाधनों का भी अभाव है।

गैर कृषि व्यवसाय

अन्य व्यवसाय में संलग्न जनसंख्या उस जनसंख्या को कहते हैं, जो कम से कम एक वर्श से किसी ऐसे आर्थिक व्यवसाय में संलग्न है जो कषशि या पारिवारिक उद्योग से सम्बन्धित नहीं है। वर्श 2011 में अध्ययन क्षेत्र में अन्य कार्य में संलग्न जनसंख्या का प्रतिशत 16.02 था जिसमें सर्वाधिक प्रतिशत 23.19 पडरौना विकासखण्ड में है जबकि न्यूनतम प्रतिशत 9.74 नेबुआ नौरंगिया विकासखण्ड में है। वर्ष 2019 में सर्वाधिक प्रतिशत 35.93 तमकुही विकासखण्ड में है जबकि न्यूनतम प्रतिशत 15.97 नेबुआ नौरंगिया विकासखण्ड में है।

उपर्युक्त विश्लेशणों के आधार पर हम कह सकते है कि मानव संसाधन के गुणात्मक विकास की उपरिहार्य आवश्यकता है। यदि तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या को सष्जनशील बनाया जाये तो भारत चीन की भाँति जनासंकीय लाभांश से लाभान्वित हो सकता है।

संदर्भ सूची

1. Rechards, I. (1978) : Population and Settlements in Merruth District, Ph.D. Thesis (unpublished), D.D.U. Gorakhpur University Gorakhpur.
2. District Census Hand Book, 2011
3. जिला सांख्यिकीय पत्रिका, कुशीनगर 2001, 2011, 2019
4. Thompson W.S. (1951) : Population Progress in for East, London, P.54
5. Agrawal, S.N. (1971) : India"s Population Problem.